मेरी रचना कितनी सुन्दर

अंक 5, नवम्बर 2021

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

संदर्भ व्यक्ति व मुख्य प्रशिक्षक :

डॉ. तबीनाह अंजुम कुरैशी (सीनियर जर्नलिस्ट आउटलुक पत्रिका)

मार्गदर्शन एवं परिकल्पना :

अंकुश सिंह, यूनिसेफ, राजस्थान

विजय गोयल, रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स (आर.आई.एच.आर.)

मनीष सिंह, मंजरी संस्थान, बूंदी

संपादक :

शिव नयाल

(अंताक्षरी फाउंडेशन)

सहयोग :

अशोक कुमार – लोक विकास संस्थान सरवाड़

उषा चौधरी – विकल्प संस्थान, उदयपुर

लता सिंह – आर.आई.एच.आर. जयपुर

विश्लेषण एवं लेखन :

कौमुदी – दशम एलाइंस

अल्का परमार – स्नेह आंगन

(विभिन्न संस्थाओं के बच्चे)

प्रकाशन :

दशम एलाइंस के द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से

आर.आई.एच.आर.के माध्यम से प्रसारित

ग्राफिक डिजाईनर :

आयुष कम्प्यूटर्स एण्ड टाइपिंग इंस्टिट्यूट

9414941489, 8890870215

भूमिका

शिक्षा में बनी रूकावट एक महामारी जिसने बच्चों को उनके स्कूल, खेल कूद के मैदान, दोस्त और बाहरी दुनिया से बिल्कुल दूर कर दिया। विगत दो वर्षों में सभी स्थितियां पूर्ण रूप से बदलीं। बच्चों द्वारा हर स्थिति को कहानी कविताओं में उकेरा गया और तस्वीरों में दर्शाया गया। इस दौरान बच्चों ने कहानियों में अपने आसपास हो रही गतिविधियों, प्राकृतिक, जीव-जन्तुओं, अपने अंदर और पारिवारिक बदलावों को लिख कर अपने भाव प्रदर्शित किये।

इस पुस्तक के माध्यम से कई बच्चों के अंदर आत्मविश्वास जागा है। कई बच्चों ने अपने अपने शहरों में सामाजिक संस्थाओं के साथ जुड़कर कोविड़ के दौरान कई सराहनीय कार्य किये। इस दौरान दूर दराज सीमा पर रह रहे बच्चें भी इस कार्यशाला से जुड़ पाये।

बच्चों में हमेशा से सीखने और विकास की प्रक्रिया स्वाभाविक रही है। इन कार्यशालाओं में बच्चों के लिए अपने आस-पास के वातावरण को देखना, उसे अनुभव करना और उसको फोटोग्राफी और कहानी के माध्यम से चित्रांकित करना मजेदार रहा। इन कार्यशालाओं में 187 बच्चों ने फोटोग्राफी और लेखन के बारे में जाना और कार्यशाला में सीखी गयी सभी बातों को कहानी, कविताओं और अपने द्वारा खींची गयी तस्वीरों के माध्यम से हमें अपने आस-पास के वातावरण के बारे में बताया। इससे उन पर पड़ने वाला प्रभाव दिखाई देता है।

कार्यशाला में 17 जिलों के 22 संस्थाओं के 187 बच्चों ने अपनी पूर्ण रूप से भागीदारी रखी। कार्यशाला में सिखाये गये तरीकों को बच्चों ने बखूबी अपनी कविता, कहानियों और तस्वीरों के माध्यम से दिखाया।

इस अंक में चौथी व पांचवी कार्यशालाओं के दौरान बच्चों द्वारा लिखी गई कहानी व कविताएं तथा फोटोग्राफ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

पाठकगण अपनी प्रतिक्रियाएं भेजेंगे तो खुशी होगी।

कौमुदी

✍ संपादक की कलम से

मेरी रचना, हमारा संसार

समय समय पर बच्चों के लिए रचनात्मक मंच तैयार करना दशम का प्रयास रहा है। यह अवसर व समय बाल सृजन को स्थान देने, कुछ नया रचने के लिए तलाशा गया था। जहां पर बच्चे अपनी बात को, रचनात्मक विचारों को अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकें।

काफी समय के बाद स्कूलों में चहल पहल हुई है। बच्चों के चेहरों पर मुस्कान खिली है। स्कूल में, बस्ते में, स्कूल के रास्ते में जमीं धूल गर्द उड़ी है। मतलब कुछ नया होने की आहट है।

बच्चों द्वारा रचे, लिखे, चित्र, फोटो, कही गई बातों को अभियान की सहयोगी संस्थाओं ने समझने का प्रयास किया है। सभी बच्चों की बातों को एक किताब में समायोजित करना आसान नहीं होता। परंतु दशम ने यह चुनौती को स्वीकार किया तभी एक रास्ता बन पाया। इस काम में विविधता को समझने का धैर्य चाहिए।

इस बीच में अंर्तराष्ट्रीय बालिका दिवस, राष्ट्रीय बाल दिवस के साथ दीपोत्सव मनाया गया है। दशम एलाइंस के प्रयास से बच्चों की अभिव्यक्ति उड़ान भरती रही है । बाल रचना संसार को कार्यशालाओं के माध्यम से आगे बढ़ाता रहा है।

इस दौरान बच्चों से बातचीत, चर्चा, सम्पर्क, संवाद, कभी डिजिटल माध्यमों से कभी कार्यशालाओं के द्वारा हुआ है। बच्चों की सहभागिता से ही इस काम को आगे बढ़ाया जा सकता था। तभी मेरी रचना हमारी हो जाती है। मेरी रचना कितनी सुंदर, किताब बन जाती है। मैं से हम, हम से समूह, समूह से सहभागी बनने की शुरुआत हुई है।

दशम का पाँचवां अंक अपने साज श्रृंगार के साथ आपके हाथों में पहुँचा है । आगे आपको तय करना है मेरी रचना मेरा संसार कैसे बन सकती है।

शिव नयाल

विषय सूची

शीर्षक	लेखक – संस्था का नाम	पेज नं॰
बेरोजगार होना	प्रियंका भावरीया – अन्ताक्षरी फाउंडेशन	1
राहत मिलि	विशाल भारद्वाज – ग्राम चेतना केन्द्र, खेडी मिल्क	2
रज्जो रानी का प्यार	पल्लवी शर्मा – विकल्प संस्था, उदयपुर	3
बेटियां	शिवानी यादव–विकल्प संस्थान, उदयपुर	5
THE TERROR OF THE INVISIBLE....	Saloni Singh Gour & रिसोर्स इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स	6
मानसून की बारिश	प्रेरणा चितारा – विकल्प संस्थान	8
कोरोनाकाल में किया कुछ नया	सलोनी ठाकुर – भंवरगढ़	9
अनाथ बच्चे	अनिशा यादव – रिसोर्स इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स	10
चिड़िया	निवेदिता – रिसोर्स इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स	11
गुरू की महिमा	पठान खान – दूसरा दशक बाप	12
कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव		13
कार्यशाला में प्रतिभागी बच्चों द्वारा खींची गयी तस्वीरें		14
CCI के बच्चों द्वारा बनाये गये पोस्टर		23
कार्यशाला 5 में प्रतिभागी बच्चों के नामों की सूची		26
कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्था का परिचय		28

बेरोजगार होना

प्रियंका भावरीया

यह कहानी जयपुर शहर के मुण्डवाड़ा गांव मे रहने वाले एक निर्धन परिवार के रामू की है। रामू अपनी पत्नी कमला व उसके बेटे रमेश के साथ रहता था। रामू चाचा बहुत शराब पीते थे जिस कारण वह बिमार रहते थे और कमला चाची पड़ोस के घरों में जाकर झाड़ू पोछा करती थी। जो भी आमदनी प्राप्त होती वह उससे अपने घर का खर्चा चलाती थी। रामू चाचा कुछ काम नहीं करते थे वह और ज्यादा बिमार रहने लगे। वह हमेशा चारपाई पर ही लेटे रहते थे। चाची पड़ोस वाले घरों में जाकर झाड़ू पोछा लगाकर अपना घर चलाने के साथ साथ अपने पति का इलाज भी करवातीं।

कोविड-19 में लॉकडाउन लगने की वजह से सभी लोग यह समझते कि चाचा जी कोरोना वायरस के शिकार हो गये। इस डर से पड़ोसियों ने कमला चाची को अपने घर में आने नहीं दिया जिस कारण वो अपने घर का खर्चा नहीं चला पा रही थी। कमला का परिवार भूख से परेशान होने लगा। उसी गांव में राखी चाची भी रहती थीं। वह बहुत धनवान थी। एक दिन राखी चाची जब कमला चाची के घर के पास से गुजर रही थी। तब उनके परिवार की हालत देखकर चाची जी ने कमला चाची की मदद की। उन्हें राशन, बाकी जरूरत का सामान और घर के लिए खर्चा दिया। राखी चाची ने रामू चाचा के इलाज के लिए हॉस्पिटल ले जाने में भी मदद की। राखी चाची ने कमला के बेटे रमेश के लिए कुछ किताबों का इंतजाम किया जिससे वह पढ़ सके।

राखी चाची ने कमला चाची की लॉकडाउन जैसे मुश्किल समय में मदद कर उन्हें कई बड़ी परशानियों से बचा लिया। लॉकडाउन के नियमों का पालन करते हुए राखी चाची ने मदद भी की और अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा। गांव में बाकी लोगों को भी राखी चाची ने जागरूक किया और रामू चाचा भी धीरे धीरे स्वस्थ होने लगे।

राहत मिली

विशाल यादव

एक गांव में दीपलाल नाम का व्यक्ति रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी कुसुम और 6 साल की बेटी प्रिया रहती थी। दीपलाल एक ठेकेदार के पास काम करता था और ठंडे पानी, जूस का ठेला लगाता था। दीपलाल रोजाना चिलचिलाती गर्मी में अपना ठेला लेकर काम पर निकल जाता था।

एक दिन उसकी दुकान पर एक ग्राहक आया और फोन पर बात करते हुए कहता है कि "दो दिन बाद लॉकडाउन लगने वाला है, आज ही जरूरी सामान खरीदने जाना है"। दीपलाल को कुछ समझ नहीं आया कि वह व्यक्ति क्या बात कर रहा था पर उसकी दुकान पर रखे रेडियो में दीपलाल ने समाचार के माध्यम से सारी बात समझली और जल्दी जल्दी अपने ठेकेदार के पास गया और उसका ठेला उसे लौटाकर अपनी मजदूरी के पैसे मांगे जिसमें उसे दिन के तीन सौ रुपये मिले। उन रुपयों से दीपलाल ने महिने भर का राशन खरीद लिया।

दीपलाल की पत्नी ने बहुत सूझबूझ से महिने भर के राशन को अच्छे से चलाया। उस समय कोई दुकाने नही खुली थी और सब्जीयां भी नही मिल रही थी तब फिर उसने फैसला किया वह सब्जीयां और कुछ खाने का सामान अपने घर के सामने एक खाली जगह में उगायेगा और जब तक वह सब्जीयां उगती तब तक गांव वालों ने उसे कुछ राशन दिया और इसी तरह दीपलाल का लॉकडाउन आराम से गुजर गया। लोगों की मदद मिलने से दीपलाल को जो राहत मिलि उससे उसके परिवार में कोई परेशानी नही हुई।

रज्जो रानी का प्यार

पल्लवी शर्मा

बासनी गांव में शुभम नाम का एक किसान रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी मीना और उसके दो पुत्र अमित व रवि रहते थे। उसके पास एक गाय थी जिसका नाम रज्जो था। शुभम की गाय रज्जो दिखने में बहुत ही सुन्दर थी। उसकी आंखे बड़ी-बड़ी व नम हुई दिखाई देती रज्जो एक दम सफेद रंग की थी और उसका कद थोड़ा ऊँचा था लेकिन रज्जो बहुत कम दूध देती थी।

शुभम की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। शुभम चाहता था कि रज्जो के दूध से वह मिठाई बनाकर कोई कारोबार शुरू करे लेकिन रज्जो इतना ही दूध देती थी कि उसकी रोजी-रोटी की जरूरत पूरी हो जाये और उसके पुत्र अमित व रवि भी पी पाये इसलिए शुभम अपनी रज्जो को रोज पास के गांव के खेतों में चरने के लिए ले जाता था। एक दिन रज्जो घास चरते-चरते थोड़ी दूर निकल गई। उस दिन उसे वहां पर एक बछड़ी दिखाई दी जो अकेली बैठी थी रज्जो उसके पास गई और उससे उसका नाम पूछा उसने अपना नाम रानी बताया रज्जो ने रानी को ऐसी गंभीर हालत में देखा रानी की आंखों से आंसुओं की बून्दे गिर रही थी और रज्जो ने आश्चर्य से रानी को पूछा तुम्हारी मां कहां है और तुम यहां कैसे पहुंची। रानी जो रो रही थी धीरे से बोली मेरी मां ने मुझे बाहर घास चरने के लिए मना किया था पर मैने मेरी मां की बात नहीं मानी और मैं बाहर निकल आई। घर से बहुत दूर पहुंच गई। अब मैं क्या करूं।

इतना सुनते ही रज्जो ने रानी को अपने पास बिठा दिया। रानी ने रज्जो से कहा मुझे बहुत भूख लग रही है। रज्जो इतना सुनते ही रानी को दूध पिलाने लगी और रज्जो ने रानी से कहा तुम बहुत सुन्दर दिखती हो। तुम्हारी आंखे देखकर बहुत मासूमियत झलकती है और तुम्हारे कान बहुत छोटे-छोटे व सुन्दर दिखते हैं। इतना सुनते ही रानी की आंखों से पानी आ गया वो रोने लगी रज्जो ने रानी से पूछा तुम्हारी आंखों में ये दर्द कैसा क्या बात है?

रानी दुख भरी आवाज में कहने लगी ऐसे ही मेरी मां मेरी तारीफ किया करती थी रानी की बात सुनकर रज्जो का भी मन भर आया। रानी ने रज्जो से कहा क्या मैं तुम्हे अपनी मां बोल सकती हूं ? इतना सुनकर रज्जो का मन बहुत खुश हुआ और रज्जो ने रानी से पूछा और तुम्हें क्या चाहिए।

रानी ने कहा मुझे बहुत भूख लग रही है रज्जो ने रानी को दूध पिलाया और आपस में बातचीत करने लगी। यहां कितनी हरियाली है लगता है अच्छी बारिश हुई है। हमारे खाने के लिए बहुत सारी घास बड़ी हो रही है। चलो चल कर खाते हैं रज्जो रानी से बहुत प्यार करने लगी थी और रानी भी रज्जो को अपनी मां मानने लगी थी। रानी भी रज्जो को अपनी मां मानने लगी थी।

भारतीय समाज में गाय को गौ माता कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि की रचना की थी तो सबसे पहले गाय को ही पृथ्वी पर भेजा था। आयुर्वेद के अनुसार भी मां के दूध के बाद बच्चों के लिए सबसे फायदेमंद गाय का ही दूध होता है।

बेटियां

शिवानी यादव

बेटियां माता-पिता का एक सपना होती है
बेटियां ही देश का आत्मसम्मान होती है।

बेटियां ही बेटों से बढ़कर होती है।
बेटियां ही मां का आंचल होती है।

बेटियां ही भाईयों की दुलारी होती है।
बेटियां ही घर की रौनक होती हैं

बेटियां ही समाज में एक संदेश होती है।
बेटियां ही सुख का सागर होती है।

बेटियां ही गंगा की तरह पवित्र होती है।
बेटियां ही है जो आखिर तक साथ निभाती है।

बेटियों को कभी भी कैद नहीं रखना चाहिए
क्योंकि बेटियों को भी आजादी का पूरा हक है।

THE TERROR OF THE INVISIBLE....

Saloni Singh Gour

I never thought that something was going to hit hard this year.

I never knew that I had to step out of my home with an intense fear.

I asked myself "How a simple sneeze can be so terrifying?" And oh! How can I forget those months of summer without any icecream or outing?

An inevitable wave of questions was flowing through my mind. As the haunting bold news headlines caught my sight, I realised that nothing was fine.

My heart was broked when I saw my favourite Punjabi eatery closed.

The busy Monday morning roads were now chilled into the wave of terror.

From the Dhobi Ghat to the luxurious showrooms of cars; all were closed with the shutters describing the usage of the masks.

I felt that the mother earth was taking her revenge from the mankind in the strangest of ways she could have find.

School life was transformed. New apps were disclosed with different features to display the academic creatures.

I didn't know that the open fresh air would become so unhealthy to breathe in.

My desire for those crispy aloo tikki burgers with cheesy fries every weekend, hanging out with friends and most importantly going to school was bursting me out with restlessness due to the lockdown's creepyness.

Tears were rolling down my eyes when I saw my wardrobe running out of dresses as I hadn't shopped for long.

Virtual chats were not fulfilling my desire to express my feelings to my friends that how much I missed them as they were my heart's tiny gems.

Movie theatres were closed and television was the only source of entertainment left.

"Who did this theft? Who stole the fulkas & left the paanipuri stalls empty?"

Oh my dear, that's so pity!

But wait; let me check if I am able to pronounce the name of this universal thief;

"Co-oo-rn-aa-…."

Umm, it's the famous Corona Virus. It was like yesterday when it took its Chinese birth & today it is shouting loud at earth to define it's worth.

The crave for money and ambition was now replaced by the crave for hospital beds and oxygen.

And why not? Afterall, all this was the result of our lame attitude towards the nature.

This incidence has taken mankind to a great venture that is the new normal.

With all these struggles, we have turned into responsible bubbles bloating into the nature's garden.

मानसून की बारिश

मूमल चितारा

गर्मी के मौसम में दोपहर का वक्त था बादलों के पीछे सूर्य छिपा हुआ सा दिख रहा था। चारों ओर पेड़ सूखे और पत्तियां जमीन पर गिरी हुई थी। हरे भरे जंगल में एक पेड़ की शाखाएं बुरी तरह से मुड़ी हुई थी। तेज गर्मी और पानी की कमी से पेड़ सूख गया था जिस कारण सभी पेड़ उस पेड़ का मजाक उडाते थे। बाकी पेड़ हमेशा उस पर चिल्लाते थे जिससे वह पेड़ बहुत दुखी रहता था। वो हमेशा सोचता था कि काश मैं भी बाकी पेड़ों की तरह सुन्दर होता। मुझे ऐसा क्यूं बनाया, ना तो मैं किसी को छाया दे सकता हूं और ना पक्षी मुझ पर घोंसला बना सकते हैं। मेरी किसी को जरूरत भी नही है।

एक दिन सुबह-सुबह उस जंगल में एक लकड़हारा आया उसने पेड़ों पर नजर डाली और उसने देखा कि पूरा जंगल हरे भरे पेड़ों से भरा हुआ है। मुझे इन्हें जल्दी से काट लेना चाहिए इनकी सुन्दर, मोटी लकड़ीयां बेच कर मैं खूब सारा पैसा कमाउंगा और ये कहते ही उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई सभी पेड़ों को उसने शाम होने तक काट गिराए। फिर लकड़हारे ने उस बदसूरत पेड़ की तरफ देखा और उसके पास बैठ कर खाना खाने लगा। सूखे पेड़ के नीचे एक सुन्दर सी बैठने की जगह थी तो लकड़हारा वहीं थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गया। लकड़हारा नींद से जागा और सभी कटे पेड़ों को लेकर गांव की ओर चल दिया। सूखे पेड़ के नीचे बचे हुए खाने की वजह से कई गिलहरी, चींटी और चिड़ियां आने लगी। कुछ सप्ताह बाद मानसून आया और बहुत अच्छी बारिश हुई। सूखे पेड़ को पानी मिलने से उसमें नई पत्तियां और टहनीयां आने लगी धीरे धीरे वो सूखा पेड़ भी हरा भरा हो गया। गर्मी की उस शाम लकड़हारे ने उस सूखे पेड़ को बेकार समझ कर छोड़ दिया जिस कारण समय आने पर मानसून की पहली बारिश में पेड़ हरा भरा हो गया। अपने आस पास कटे हुए पेड़ों को देखकर उसे बहुत दुख हुआ पर वो जानता था कि एक दिन सभी कटे हुए पेड़ बड़े हो जाएगे और फिर से पूरा जंगल हरा भरा हो जाएगा।

कोरोना काल में किया कुछ नया

सलोनी ठाकुर

बारां जिले के किशनगंज कस्बे के एक छोटे से गांव में एक लड़की रहती थी, जिसका नाम सोना था। 12वी कक्षा में अच्छे अंको से पास होकर माता-पिता के सहयोग से सोना ने कालेज में प्रवेश लिया। सोना प्रतिदिन बस से 20 किलोमीटर दूर कालेज आती जाती थी, सोना अपने गांव में अकेली लड़की थी जो कालेज में पढ़ने जाती थी। गांव के सब लोग उसे बहुत प्यार करते थे क्योंकि वह सबकी मदद करती थी।

कोरोना काल से पहले तक जिन्दगी व्यस्त थी, घर से कालेज और कालेज से घर। कोविड-19 की वजह से हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, गांव में अधिकांश लोग अशिक्षित, खेतीहर मजदूर दिहाड़ी मजदूर थे, काम नहीं मिलने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही थी। कुछ परिवारों में विशेषकर महिलाओं व लड़कियों को कई तरह की समस्याऐं भी आ रही थी । सब सोना के पास आते और कुछ मदद की आशा करते। सोना भी उन सबकी मदद करना चाहती थी। उसने इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन कार्यक्रमों के बारे में जाना। सरकार व क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं से सम्पर्क कर गांव की समस्याओं के बारे में अवगत कराया। फिर क्या था, सरकार ने स्थानीय संस्था की मदद से गांव में सहयोग करने के लिए सोना को जिम्मेदारी दे दी। सोना इन्टरनेट व संस्था की मदद से गांव के लोगों की मदद करने लगी। संस्था के सहयोग से सोना ने अपने गांव में बच्चों का पढ़ाने का काम भी करने लगी। कुछ पल ऐसे भी मिले जिससे हमने अपने परिवार के साथ समय गुजारा और हमारे अन्दर के गुणों को पहचाना। सोना बताती है कि ''कोरोना के समय इंटरनेट ने ही हमारी सहायता की है चाहे वो स्कूल की पढ़ाई हो, ऑफिस का काम हो या हमें नया-नया सीखना हो या मनोरंजन करना हो। मैंने कुकिंग भी सीखी है, यूट्यूब पर देख-देख कर मैंने छोले भटूरे, समोसे, गुलाब जामुन बनाये और मेरे परिवार को भी खिलाया।'' इन्टरनेट के माध्यम से सोना गांव के बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण का कार्य करवाती किसी को भी कोई मदद की आवश्यकता होती तो सोना उसको हल करने में मदद करती। कोरोनाकाल में वैसे तो सब कुछ बुरा हुआ है किंतु हमें हमेशा सकारात्मक सोचना चाहिए और उस परिस्थिति में ऐसा क्या किया जाए जिससे हम खुश रहें और हमारे आसपास के लोगों को भी खुश रख सकें इसके बारे में सोचना चाहिए।

अनाथ बच्चे

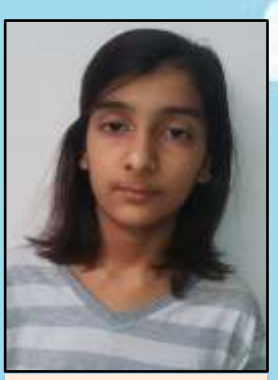

अनिशा यादव

एक गांव में एक छोटा सा परिवार रहता था जिसमें दो बच्चे अपने माता-पिता और दादी के साथ रहते थे। बड़ी बेटी पायल दसवीं कक्षा में और छोटा बेटा रवि सातवीं कक्षा में पढ़ते थे। कोरोनाकाल की बात है जब पूरे देश में कोरोना नामक बिमारी फैलने की अफवाह उड़ रही थी सरकार ने स्कूल कालेज बन्द कर दिये थे लोगों को घरों में ही रहने के लिए कहा जा रहा था। परीक्षा परिणाम के बाद उनकी कुछ दिन की छुट्टियां हो गई कोरोना महामारी के कारण पूरे देश में लॉकडाउन हो गया और स्कूल की छुट्टियां एक महीने और बढ़ा दी गई और उन बच्चों की घर पर ही ऑनलाइन कक्षा होने लगी। उनके माता-पिता अपने काम करने घर से बाहर जाते तो मास्क, सेनेटाइज़र और दो गज की दूरी का ध्यान रखते।

कोरोना महामारी की पहली लहर में उनके परिवार में किसी को कोई परेशानी नहीं हुई और जनवरी 2021 में उनके स्कूल दोबारा खुल गए। वे केवल 3 महीने ही स्कूल गए थे कि कोरोना महामारी दोबारा आने और दूसरी लहर के कारण उनके स्कूल दोबारा बंद हो गए। इस बार माता-पिता जब काम पर जा रहे थे तो पिछली बार की तरह अपनी सुरक्षा का इतना ध्यान नहीं रख रहे थे। वे बाहर जाते तो मास्क भी नहीं लगाकर जाते थे और उन्होंने वैक्सीन भी नहीं लगवाई थी। रवि और पायल अपने माता-पिता वैक्सीन लगवाने और मास्क पहनने के लिए खूब समझाते पर वे नहीं मानते। अचानक उनके माता-पिता की तबीयत बिगड़ गई और टैस्ट करवाने पर पता चला की वे दोनों कोरोना महामारी के शिकार हो गए और उनकी अचानक मौत हो गई। अब रवि और पायल अपनी दादी के साथ रहने लगे उन्होंने अपने दादी को वैक्सीन लगवाई क्योंकि वे अब अपनी दादी की नहीं खोना चाहते थे और उनका अच्छे से ख्याल रखने लगे।

चिड़िया रानी

रोज सुबह जल्दी उठ जाती,
चूं-चूं चींची शोर मचाती।

निवेदिता

आसमान में दिखती हो,
तारों जैसी चमकती हो।
बादलों में उड़ती हो,
दाना लेकर लौटती हो।

बच्चों के लिए खाना लाती,
और उसे तुम खुद भी खाती।
तुम हो बड़ी सयानी,
मुझको प्यारी चिड़िया रानी।

बच्चों पर हो हुकुम चलाती,
मेरी मां जैसी बनती जाती।
तुम भी स्कूल या ऑफिस जाती?
या घर पर ही रौब जमाती?

रोज सुबह जल्दी उठ जाती,
चीं-चीं चूं-चूं शोर मचाती।

गुरू की महिमा

पठान खान

गुरू के चरणों की धूल,
चंदन बने या गुलाल,
जिसने भी अपने मस्तक पर लगाई,
किस्मत चमकी बार-बार, बार-बार ।।

जिसके पास हो धर्म,
वो कभी नहीं होता उदास,
और जिसके सिर पर हो,
गुरूदेव का हाथ वो कभी नहीं होता अनाथ।।

गुरू से बढ़कर, कुछ अनमोल नहीं
हर वस्तु का मोल है पर गुरू का कोई मोल नहीं।।
गम देने वाले तो, हर पल हैं यहां
खुशी देने वालों में, गुरू आपको ही देखा।।

कैसे गुणमान करूं आपका शब्दों की औकात नहीं
सागर को गागर में भरना, मेरे बस की बात नहीं।।
ओ गुरूदेव आप जो मिले, मुझको सहारा मिल गया
अटकी हुई कश्ती को, किनारा मिल गया।।

कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव	नकारात्मक प्रभाव
इस दौरान फिजूल खर्चे कम हुए और लोगों ने कम पैसों में जीवन जीने के तरीकों पर ध्यान दिया।	लॉकडाउन लगने के कारण मंहगाई बढ गयी है जिससे सभी चीजें मंहगी हो गयी है जिसके कारण जरूरत का सामान लेना भी मुश्किल हो गया है।
घर में माता पिता साथ में बैठा कर रोजाना 3 घंटे पढ़ाई करवाते। जिससे पढ़ने के सही तरीके पता चले।	स्कूल बन्द होने की वजह से ऑन लाइन पढ़ाई शुरू हुई परन्तु हमारे पास स्मार्ट फोन ना होने के कारण हम ऑनलाइन क्लास भी नहीं ले पाये।
मां ने घर के काम के साथ अपनी नई रूचीयों पर ध्यान दिया नये काम को कर पैसे कमाने का रस्ता बनाया।	पापा का काम रूक गया, जिससे हमारे घर का खर्चा चलता था, मेरी और मेरे छोटे भाई बहनों की पढ़ाई छूट गयी।
काम में व्यस्त रहने के कारण घरवालों के लिए समय ही नहीं निकाल पाते थे लेकिन कोविड-19 में घर रहने से ये समस्या समाप्त हो गयी।	कई लोग धार्मिक और रूढिवादी अफवाह फैला रहे थे जिस कारण लोगों में भ्रम और नकारात्मकता हो गयी थी।
इस दौरान अपने परिवार के साथ समय बिताने के कारण लोगों को बेहतरीन पथ मिले हैं। अपने घर के बुजुर्गों के साथ समय बिता रहे हैं और रिश्तों में आई कड़वाहट को मिटा रहे हैं।	जो रोजमर्रा के काम से अपने घर का पेट पालते थे आज उनके लिए एक वक्त की रोटी मुश्किल हो रही है। कई ऐसे मजदूर हैं जो भूखे पेट सो रहे हैं।
इस दौरान अपनी कमियों को देखकर उन्हें सुधारने का मौका मिला।	लॉकडाउन की वजह से देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान हुआ।

कार्यशाला में प्रतिभागी बच्चों द्वारा खींची गयी तस्वीरें

पल्लवी

बहादुर

बहादुर

पल्लवी

पल्लवी

आरती

मोनिका

बलविन्दर

पल्लवी

बलविन्दर

गज़ल

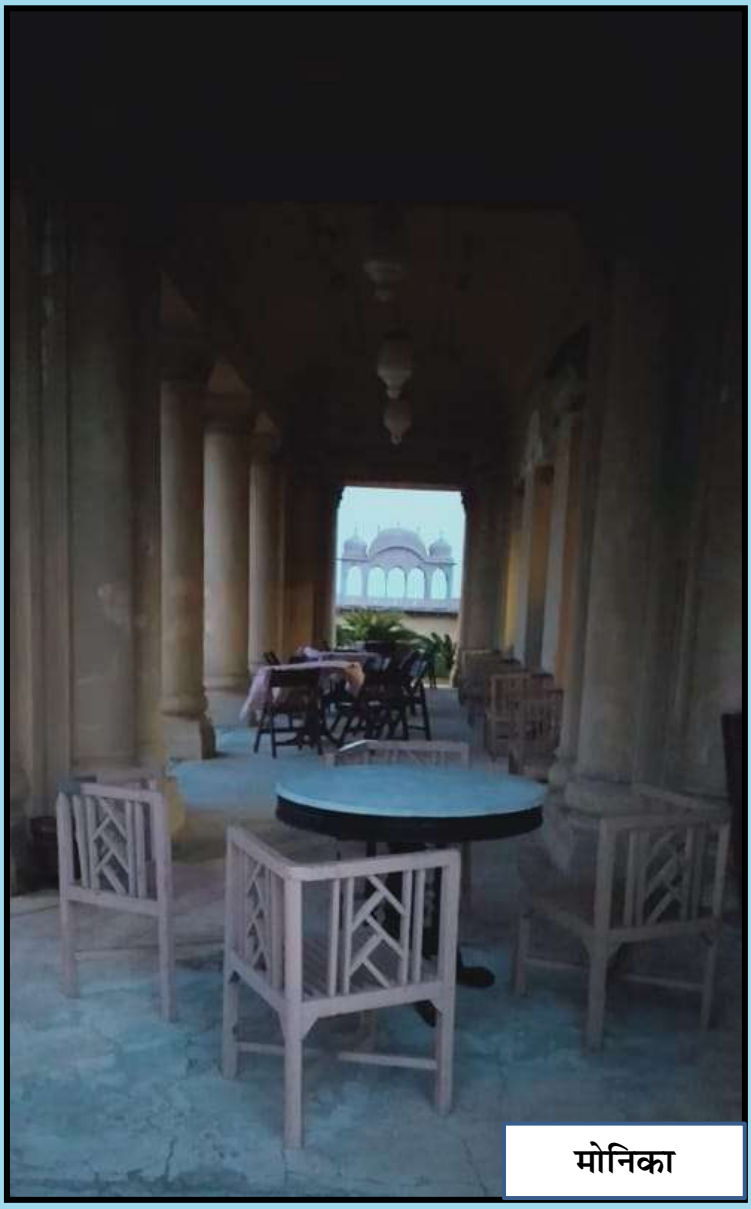

मोनिका

आरती

बहादुर

अंजली

बहादुर

पल्लवी

मुस्कान

संतोष कुंवर

CCI के बच्चों द्वारा बनाये गये पोस्टर

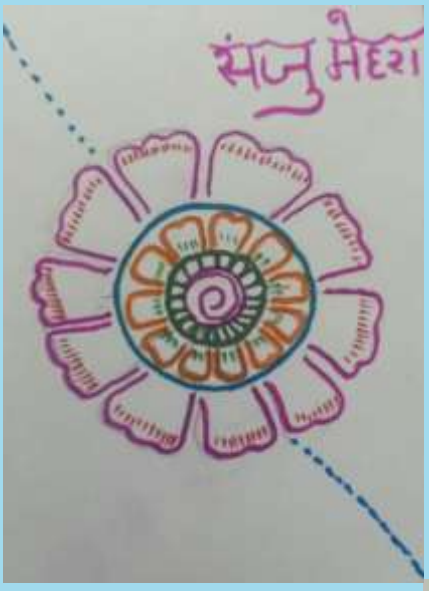
संजु मेहरा

कार्यशाला 5 में प्रतिभागी बच्चों के नामों की सूची

क्र. स.	नाम	संस्था का नाम
1	मेमन	एमिड अलवर
2	मदीना	एमिड अलवर
3	कंचन	एमिड अलवर
4	बलविन्दर	एमिड अलवर
5	ममन	एमिड अलवर
6	पिंकी	एमिड अलवर
7	वसीम खान	एमिड अलवर
8	मोनिका	एमिड अलवर
9	आरती	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
10	अनिता	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
11	सरोज	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
12	ध्रुवी	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
13	आनिया	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
14	सिद्धि बैरवा	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
15	रोदू राव	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
16	रोशनी कुमारी	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
17	भूमिका कुमारी	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
18	प्रिंस जांगिड़	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
19	कनक	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
20	कार्तिक	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
21	सुहानी	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
22	धीरज	लोक विकास संस्थान, सरवाड़

23	मूमल चितारा	विकल्प, उदयपुर
24	कोमल चौहान	विकल्प, उदयपुर
25	शालिनी चितारा	विकल्प, उदयपुर
26	दीपिका प्रजापत	विकल्प, उदयपुर
27	नीतू सुथार	विकल्प, उदयपुर
28	लक्ष्मी तेली	विकल्प, उदयपुर
29	जूही तेली	विकल्प, उदयपुर
30	कोमल मेघवाल	विकल्प, उदयपुर
31	अशोक गमेती	विकल्प, उदयपुर
32	पल्लवी शर्मा	विकल्प, उदयपुर
33	दीपक शर्मा	विकल्प, उदयपुर
34	लक्षिता मेघवाल	विकल्प, उदयपुर
35	पूजा मेघवाल	विकल्प, उदयपुर
36	शादिया बानू	विकल्प, उदयपुर
37	कोमल हरिजन	विकल्प, उदयपुर
38	केसर लोहार	विकल्प, उदयपुर
39	ललित लोहार	विकल्प, उदयपुर
40	मुस्कान बानो	विकल्प, उदयपुर
41	अंजली यादव	विकल्प, उदयपुर
42	शिवानी यादव	विकल्प, उदयपुर

कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्था का परिचय

विकल्प

2004 में ''विकल्प'' को युवाओं के एक समूह द्वारा लिंग आधारित हिंसा और भेदभाव से मुक्त समानता, शांति और न्याय पर आधारित समतावादी समाज बनाने की दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ गैर संरकारी संस्था के रूप में पंजीकृत किया गया था।

''विकल्प'' युवाओं के बीच विश्लेषणात्मक–दृष्टिकोण परिवर्तन लाने के लिए 4 स्तरीय रणनितियों (सामुदायिक जागरूकता, हितधारकों को जवाबदेह बनाना, महिलाओं और बालिकाओं की मदद करना और वकालत करना) पर कार्य करता रहा है। इसके तहत कई कार्यक्रम और अभियान जिसमें ''माई हैप्पीनेस'', ''एंगेजिंग मेन एंड ब्याइज़'', लर्निंग एंड एजुकेशन सेंटर, ''माई डॉटर राइट्स'' आदि शुरू किए गए हैं इसके परिणामस्वरूप 12,000 से अधिक बाल विवाह रुक गए हैं, 20,000 से अधिक लड़कियों को फिर से नामांकित किया गया है और आगे बढ़ रहे हैं उनकी उच्च शिक्षा और 6,000 से अधिक महिलाओं को कानूनी रूप से हिंसा मुक्त जीवन जीने में मदद की गई है।

''विकल्प'' राज्य सरकार के साथ महिला और बालिका नीतियों के निर्माण में योगदान देने के साथ-साथ विभिन्न कानूनों की वकालत करने में हिस्सा रहा है। विकल्प ने स्थानीय से लेकर राज्य प्रशासनिक स्तर तक अच्छी नेटवर्किंग बनाई है।

unicef
for every child

DASHA
ALLIANCE FOR CHILD RIGHTS

RIHR

Vikalp
Sansthan

राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान की पहल

''दशम एलाइंस''

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

932, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक रोड, जयपुर

Email ID – rihr.rajasthan@gmail.com **Web. :** http://rihrraj.org

सम्पर्क–0141–3532799, 9460387130, 7878055137